सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 12

जैनेंद्र कुमार (बाज़ार दर्शन)

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए कि पैसे की पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त किया जाता है?

उत्तर- पैसे की पावर का रस निम्नलिखित रूपों में प्रात किया जा सकता है-

(i) मकान, संपत्ति, कोठी, कार, सामान आदि देखकर।

(ii) संयमी बनकर पैसे की बचत करके। इससे मनुष्य पैसे के गर्व से फूला रहता है तथा उसे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं होती।

2. कैसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं? वे 'बाज़ारूपन' को कैसे बढ़ाते हैं?

उत्तर- लेखक कहता है कि समाज में कुछ लोग क्रय-शक्ति के बल में बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते हैं, पंरतु उन्हें अपनी ज़रूरत का पता नहीं होता। ऐसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे धन के बल पर बाज़ार में कपट को बढ़ावा देते हैं। वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं। सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। वे शान के लिए उत्पाद खरीदते हैं। इस परकार से वे बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

3. बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर- बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव ने होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर ज़रूरी चीज़े खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुँझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

4. 'बाज़ार दर्शन' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए?

उत्तर- 'बाज़ार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख भी उपभोक्तावाद व बाज़ारवाद को समझाने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाज़ार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार

Dr. Manish Kumar Dubey

का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाज़ार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज़ में तो कहीं किस्सागों की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में उन्होंने बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

5. बाज़ार दर्शन' से क्या आभिप्राय है?

उत्तर- 'बाज़ार दर्शन' से अभिप्राय है- बाज़ार के बारे में बताना। लेखक ने बाज़ार की प्रवृत्ति, ग्राहक के प्रकार, आधुनिक ग्राहकों की सोच आदि के बारे में पाठकों को बताया है।

6. बाज़ार का जादू किन पर चलता है और क्यों?

उत्तर- बाज़ार का जादू उन लोगों पर चलता है जो खाली मन के होते हैं तथा जेब भरी होती हैं। ऐसे लोगों को अपने ज़रूरत का पता ही नहीं होगा। वे 'पर्चेज़िंग पावर' को दिखाने के लिए अनाप-शनाप वस्तुएँ खरीदते हैं ताकि लोग उन्हें बड़ा समझें। ऐसे व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान नहीं करते।

7. 'पैसा पावर है' -लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- लेखक ने पैसे को पावर कहा है क्योंकि यह क्रय-शक्ति को बढ़ावा देता है। इसके होने पर ही व्यक्ति नयी-नयी चीज़ें खरीदता है। दूसरे यदि व्यक्ति सिर्फ धन ही जोड़ता रहे तो वह इस बैंक-बैलेंस को देखकर गर्व से फूला रहता है। पैसे से समाज में व्यक्ति का स्थान निर्धारित होता है। इसी कारण लेखक ने पैसे को पावर कहा है।

8. भगत जी बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कैसे कर रहे हैं? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- भगत जी निम्नलिखित तरीके से बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कर रहे हैं-

(i) वे निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलते हैं।

(ii) छह आने की कमाई होते ही बचे चूरन को बच्चों में मुफ्त बाँट देते हैं।

(iii) बाज़ार में जीरा व नमक खरीदते हैं।

(iv) बाज़ार के आकर्षण से दूर रहते हैं।

(v) अपने चूर्ण का व्यावसायिक तौर पर उत्पादन नहीं करते।

9. खाली मन तथा भरी जेब से लेखक का क्या आशय है? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर- खालीमन तथा जेब भरी होने से लेखक का आशय है- मन में किसी निश्चित वस्तु को खरीदने की इच्छा न होना तथा वस्तु की आवश्यकता न होना परंतु जेबें भरी होती है। इस कारण व्यक्ति आकर्षण के वशीभूत होकर वस्तुएँ खरीदता है। इससे बाज़ारवाद को बढ़ावा मिलता है।

10. बाज़ार दर्शन के आधार पर 'पैसे की व्यंग्य शक्ति' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पैसे में व्यंग्यशक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है। परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

11. 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बाज़ार दर्शन के आधार पर 'बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने' का आशय है-बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मज़बूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के ले गैर ज़रूरी चीज़ें खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करती, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं।

<u>पाठ आधारित अन्य प्रश्नोत्तर</u>

1. पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है , बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है खरीदने की शक्ति। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए आवश्यकता से अधिक खरीदारी करता है और बाजार को शैतानी व्यंग्य-शक्ति देता है। ऐसे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

2. लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है , इसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है, यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाते हैं।

3. आशय स्पष्ट करें।

- **मन खाली होना**
- **मन भरा होना**
- **मन बंद होना**

उत्तर- मन खाली होना- मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य न होना। निरुद्देश्य बाजार जाना और व्यर्थ की चीजों को खरीदकर लाना।

मन भरा होना- मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वह भलीभाँति जानता है कि उसे बाजार से कौन सी वस्तु खरीदनी है, अपनी आवश्यकता की चीज खरीदकर वह बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

मन बंद होना- मन में किसी भी प्रकार की इच्छा न होना अर्थात अपने मन को शून्य कर देना।

4. 'जहाँ तृष्णा है , बटोर रखने की स्पृहा है , वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' यहां किस बल की चर्चा की गयी है ?

उत्तर- लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के आत्मबल की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में यदि मन में संतोष हो तो व्यक्ति दिखावे और ईष्ट्या की भावना से दूर रहता है उसमें संचय करने की प्रवृति नहीं होती।

5. अर्थशास्त्र , अनीतिशास्त्र कब बन जाता है ?

उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे, खरीददार अपनी पर्चेचिंग पावर के घमंड में दिखावे के लिए खरीददारी करें। मनुष्यों में परस्पर भाईचारा समाप्त हो जाए खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें, एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तो बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

6. भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं ?

उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

7. भगत जी के व्यक्तित्व के सशक्त पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- निम्नाकिंत बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।

- पंसारी की दुकान से केवल अपनी जरूरत का सामान (जीरा और नमक) खरीदना।
- निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलना।
- छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना।
- बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ्त बाँट देना।
- सभी काजय-जय राम कहकर स्वागत करना।
- बाजार की चमक-दमक से आकर्षित न होना।
- समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

8. बाजार की सार्थकता किसमें है ?

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीद... वे बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

<u>गद्यांश-आधारित अर्थ-ग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर</u>

बाजार मे एक जादू है। वह जादू आँख की तरह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे

ही इस जादू की भी मर्यादा है जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी-चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान को गिल्टी की खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ देगी?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा उपाय है वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो तब बाजार न जाओ कहते हैं, लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

1. बाजार के जादूको लेखक ने कैसे स्पष्ट किया है ?

उत्तर- बाजार के रूप का जादू आँखों की राह से काम करता हुआ हमें आकर्षित करता है। बाजार का जादू ऐसे चलता है जैसे लोहे के ऊपर चुंबक का जादू चलता है। चमचमाती रोशनी में सजी फैसी चीजें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसी चुम्बकीय शक्ति के कारण व्यक्ति फिजूल सामान को भी खरीद लेता है।

2. जेब भरी हो और मन खाली तो हमारी क्या दशा होती है ?

उत्तर- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार की जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुँचे जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

3. फैसी चीजों की बहुतायत का क्या परिणाम होता हैं ?

उत्तर- फैंसी चीजें आराम की जगह आराम में व्यवधान ही डालती है। थोड़ी देर को अभिमान को जरूर सेंक मिल जाती है पर दिखावे की प्रवृति में वृद्धि होती है।

4. जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर- जादू की जकड़ से बचने के लिए एक ही उपाय है, वह यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो, मन खाली हो तो बाजार मत जाओ।